अध्ययन सामग्री

बी. ए. पार्ट - 2

प्रश्नपत्र - चतुर्थ

डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एच. डी. जैन कॉलेज
वी. कुं. सिं. वि०, आरा

25.07.20

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

कालिदास की शैली

महाकवि कालिदास की मधुर कविता जीवनदायिनी सुधा की अजस्र धारा के सदृश सहृदयों के व्यग्र हृदय के लिए आह्लादकारिणी है। मानवहृदय की सूक्ष्म भावनाओं का चित्रण ही कवि का उद्देश्य रहा है। भारतीय परम्पराओं की स्निग्ध झाँकी कालिदास की कल्पना से मण्डित होकर काव्यों के माध्यम से जो प्रकट होती है, तो कुछ अनोखा रूप ही लिए रहती है, जो सभी के मानस पटल पर अपना अप्रतिम प्रभाव छोड़ती है। अपने युग के उच्च आदर्शों का निर्मल स्वरूप कालिदास ने प्रस्तुत किया है।

भारती के अनन्य उपासक महाकवि कालिदास जीवाण भारती के रससिद्ध कवि हैं। उनकी कविता में भावों का स्निग्ध प्रवाह, शब्दों की रसाभिव्यंजकता, शैली की उत्कृष्टता सर्वत्र व्याप्त है। पद-पद पर रस की सरस धारा प्रवाहित होती है, सहृदय पाठक जिसका पान करके अपने को आकण्ठ सन्तृप्त कर लेता है।

संस्कृत काव्यों अथवा नाटकों में कालिदास की शैली अपना एक विशेष स्थान रखती है। इन्हें विश्व-प्रतिष्ठा मिलने में बहुत कुछ श्रेय इनकी शैली को है। कैसा भी नीरस और अशिष्ट कथानक या घटना को ये अपने कल्पना प्रसूत सृष्टि नैपुण्य द्वारा ऐसा भव्य, मार्मिक और चमत्कृतिपूर्ण बना

देते हैं कि वह देखते ही बनता है। इन्होंने निस्सन्देह इतिहास के गर्तों में से कथानक लिए हैं लेकिन उसका केवल कंकाल मात्र ही। मांस-रुधिर, नख-शिख, वेश-भूषा और अन्त में रस का प्राण फूंकते हुए उन्हें सजीव बनाकर सदा के लिए अमर कर देना — ये सब कालिदास की अपनी ही चीजें हैं।

कालिदास की लिखने के लिए 'वैदर्भी शैली' है। साहित्यदर्पणकार ने वैदर्भी शैली का निम्नलिखित लक्षण दिया है —

माधुर्य-व्यञ्जकैर्वर्णैः रचना ललितात्मिका।
अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वैदर्भी रीतिरिष्यते॥

अर्थात् ऐसी ललितपद रचना जिसमें वर्ण माधुर्य व्यञ्जक रहे हों और वृत्ति (समास) न हो, यदि हो भी तो छोटी ही, वैदर्भी शैली होती है। इसके अनुसार भाषा में क्लिष्टता, प्रयास-साध्यता एवं कृत्रिमता सर्वथा हेय है। कालिदास की रचना में बड़े-बड़े समासान्त पदों का सर्वथा अभाव है। जहाँ कहीं समासान्त पदों का प्रयोग हुआ भी है, वहाँ क्लिष्टता नहीं उत्पन्न हो पायी है। इनकी यह ललित, परिष्कृत तथा प्रसादगुण पूर्ण शैली ही इनको सर्वप्रिय बनाने में अधिक सहायक सिद्ध हुई है।

कालिदास की कविता वैदर्भी शैली का मनोरम निदर्शन है। कहा भी गया है —

'वैदर्भी रीति सन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते।'

माधुर्य-व्यञ्जक कोमल वर्णों के प्रयोग तथा दीर्घ समासों के अभाव से समस्त काव्य सूर्य में कमल की भाँति खिल उठा है। शृङ्गार तथा करुण रसों की प्रधानता होने के कारण कालिदास की रचनाओं में अन्तःकरण को द्रवित करने वाली आह्लादमयी पद योजना का मधुर प्रस्फुर्य है। नाद-सौन्दर्य पर कवि ने विशेष ध्यान दिया है। प्रसाद गुण तो उनकी रचनाओं की निजी विशिष्टता है। पदों के चयन में उनकी सुरुचि एवं शिष्टता का

बराबर बोध होता है। सङ्गीतात्मकता के प्रति उनकी सहज आस्था लक्षित होती है और इसीलिए कतिपय पाठक लय एवं श्रुतिमनोज्ञता के कारण ही उनकी रचनाओं की ओर आकृष्ट हो जाते हैं। आचार्य दण्डी ने मधु-द्रव से लिप्त, उनकी निर्विषया वाणी की तथा वैदर्भी शैली की यों परिशंसना की है —

"लिप्ता मधुद्रवेणासन् यस्य निर्विषया गिरः।
तेनेदं वर्त्म वैदर्भं कालिदासेन शोधितम्॥"

कालिदास की रचना-शैली में उनकी उत्कृष्ट कला-साधना पदे-पदे अभिलक्षित होकर भावक को मुग्ध कर देती है। महर्षि अरविन्द की ये टिप्पणियाँ उल्लेख्य हैं —

"कालिदास मूर्धन्य कलाकार हैं, भावना में गम्भीर तथा रचना में मधुर नाद एवं भाषा के स्वामी, जिसने गीर्वाणगिरा की असीम सम्भावनाओं में से अपने लिए वैसी पद्य-पद्धति तथा पद-योजना का निर्माण कर लिया है, जो निश्चितरूपेण अत्यधिक महान्, अत्यधिक शक्तिशाली एवं अत्यधिक नाद-विकसित है। कालिदास ने संस्कृत को श्रेष्ठ नाद के भव्य प्रासाद में निर्मित कर दिया है और उनकी कृतियों से निर्गत होने वाली ध्वनि, वही ध्वनि है जो प्राक्तन साहित्य की सर्वोत्तम रचनाओं में मिलती है। इस साहित्य की शैलीगत विशेषताएँ हैं — एक सुगठित किन्तु स्वाभाविक संक्षिप्तता, एक मसृण गाम्भीर्य एवं सुस्निग्ध औदार्य, गद्यगत श्रेष्ठ स्वर-सामञ्जस्य, परिष्कृत गद्य का सशक्त एवं प्राञ्जल सौन्दर्य और सबसे बढ़कर संक्षिप्त तथा प्रभविष्णु पदावली की निश्चित अर्थवत्ता, जिसमें ऋजु और माधुरी लवालव छलकते हैं। पुनः यह भाषा इतनी लचीली है कि महाकाव्य से लेकर गीति तक के सम्पूर्ण काव्यरूपों में इनकी सुन्दर नियोजना हो सकती है, विशेषतया महाकाव्य एवं नाटक में। कालिदास ने अपनी महाकाव्यगत शैली में देववाणी की इन स्थायी विशेषताओं में नाद तथा

अभिव्यक्ति की वह पूर्णता एवं भव्यता जोड़ दी है जो आंग्ल कवि मिल्टन की शब्दविषयिणी विशेषताओं से बढ़ जाती है और अपनी नाट्यगत शैली में एक अनन्यसाधारण सौन्दर्य एवं माधुर्य जोड़ दिया है जिससे यह संलाप तथा नाटकीय वृत्ति एवं सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावानुभूति की अभिव्यक्ति के लिए सर्वथा उपयुक्त बन गई है।"

कालिदास की शैली की सबसे बड़ी विशेषता है 'ध्वन्यात्मकता' जिसके द्वारा कवि ने विभिन्न स्थलों पर भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं की ओर सूक्ष्म संकेत किया है। किसी भी भावी घटना को प्रस्तुत करने के पूर्व कवि ने उसके लिए प्रथम संकेत अवश्य कर दिया है। संस्कृत के प्रायः सभी नाटक सुखान्त होते हैं और शाकुन्तल भी सुखान्त नाटक है। इसकी सूचना कवि ने ग्रीष्म ऋतु वर्णन द्वारा 'दिवसाः परिणामरमणीयाः' कहकर दी है। किसी भाव के चित्रण के लिए कालिदास एक अनूठी शैली का आश्रय लेते हैं। ये शब्दों की व्यञ्जना शक्ति पर अधिक बल देते हैं अभिधाशक्ति पर कम। वे उसे शब्दों में कहने की अपेक्षा व्यंजना वृत्ति से उसकी ओर संकेत भर कर देना पर्याप्त मानते हैं। इस कारण इनके भाव सदा व्यंग्य ही रहते हैं, वाच्य नहीं होते और भावों की यह व्यंग्यता ही काव्य जगत् की सर्वश्रेष्ठ विभूति है जो इनकी सभी कृतियों में ओत-प्रोत हुई मिलती है। कोमल और सुकुमार भावों की व्यंजना में कालिदास अद्वितीय हैं। इसीलिए कविवर जयदेव ने उन्हें कविता-कामिनी विलास की उपाधि दी है।

इनकी शैली की दूसरी विशेषता है — 'समाहार शक्ति'। ये किसी भाव का अवसर रहते हुए भी लंबा-चौड़ा वर्णन नहीं करते अपितु अत्यन्त संक्षिप्त शब्दों में उस भाव की मार्मिक अभिव्यञ्जना कर देते हैं। भाव-व्यंजन में कालिदास ने तो अधिकतर संश्लेषणात्मक शैली ही अपनाई है, विश्लेषणात्मक नहीं।

कालिदास ने अपनी रचना में अलंकारों का भी स्थान-स्थान में प्रयोग किया है जो नितान्त दर्शनीय है। इनके अलंकार स्वाभाविक रूप में ही आते हैं और उनकी कविता कामिनी के सौन्दर्य में निरन्तर वृद्धि ही करते हैं। कहीं अनुप्रास आदि शब्दालंकार भी हैं किन्तु बहुत कम। इन्होंने अपनी कृतियों में अर्थालंकारों को अधिक महत्त्व दिया है और उनमें भी विशेषत: उपमा को, जिसके कारण ही इनकी जगत् में – 'उपमा कालिदासस्य' यह ख्याति हुई है। जिस बात को बतलाने के लिए बहुत शब्द विस्तार अपेक्षित होता है, वह इनकी एक छोटी सी उपमा द्वारा बिलकुल स्पष्ट हो जाती है।

सन्तान कामना से गाय की परिचर्या करने वाले दिलीप एवं उनकी पत्नी सुदक्षिणा के मध्य में स्थित धेनु नन्दिनी की उपमा में कालिदास ने किस अपूर्व प्रतिभा के सामर्थ्य का प्रयोग किया है, अनुमान से परे है।

'दिनक्षपामध्यगतेव उपमा' – इस उपमा में वहाँ का दृश्य इतना स्पष्ट हो जाता है कि हम उसे प्रत्यक्ष दृष्ट-सा मानने लगते हैं।

कवि कालिदास ने स्वयंवर के अवसर पर आए हुए राजाधिराजों को दौड़कर आगे बढ़ती हुई इन्दुमती की उपमा 'सञ्चारिणी दीपशिखा' के समान किया है। इस उपमा के कारण कवि का नाम भी 'दीपशिखा' कालिदास पड़ गया। इसी प्रकार उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, अप्रस्तुतप्रशंसा आदि के स्थान पर स्वाभाविक एवं समुचित प्रयोगों ने उनकी शैली को बड़ा मधुर एवं रुचिकर बना दिया है।

कालिदास वर्णन करने में असाधारण पटु हैं। वे प्रत्येक वस्तु का सजीव सा वर्णन करते हैं। उन्होंने वृक्षों, वनस्पतियों, पशु-पक्षियों, पर्वत, नदी, तालाब आदि का बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया है।

कालिदास कोमल रसों के सरस चित्रकार हैं।

गम्भीर रसों के प्रति उनकी उतनी अभिरुचि नहीं दिखाई देती। यही कारण है कि लोग उन्हें प्रधानतया शृंगार का कवि मानते हैं। शृंगार के संयोग पक्ष के ही नहीं वियोग पक्ष के चित्रण में भी उनकी लेखनी अत्यधिक सफल हुई है। उनकी यह शृंगार भावना न केवल रूप या जीवन की विलासमय स्थितियों को रँगने तक ही सीमित है, बल्कि उसमें अनुभूति की गहराई, लोकमर्यादा का समावेश और भारतीय आदर्शों का पालन हुआ है।

कालिदास छन्दों के प्रयोग में भी कुशल हैं। वे भावों के अनुसार छन्दों की रचना करते हैं। उन्होंने करुण भावों को अभिव्यक्त करने के लिए प्रायः मन्दाक्रान्ता और वसन्ततिलका तथा गम्भीर भावों को व्यक्त करने के लिए शार्दूल-विक्रीडित का प्रयोग किया है। मेघदूत में तो समस्त पद्य मन्दाक्रान्ता में ही हैं। अभिज्ञानशाकुन्तलम् में उन्होंने 24 प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया है। रघुवंश में अनुष्टुप्, प्रहर्षिणी, उपजाति, मालिनी, वंशस्थ, हरिणी, वसन्ततिलका, पुष्पिताग्रा, आदि अनेकों छन्दों का प्रयोग हुआ है। वृत्तों की यह विविधता रघुवंश जैसे महाकाव्य की व्यापक वस्तु के सर्वथा उपयुक्त है।

चरित्र-चित्रण की शैली भी कालिदास की अनूठी है। नपे-तुले शब्दों में ये अपने पात्रों का व्यक्तित्व तत्क्षण ही मानस चक्षु के आगे खड़ा कर देते हैं।

ललित पद-विन्यास, प्रचुर प्रसादगुण, मधुर भाव-व्यंजना, सरस अलंकार तथा सजीव चरित्र-चित्रण वाली शैली के कारण ही कालिदास को विश्वप्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। इनकी मधुर सूक्तियों से मुग्ध होकर ही बाण ने विश्व को यह चुनौती दी थी —

निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते॥

अर्थात् कालिदास की आम्र मञ्जरियों की तरह सरस और मधुर सूक्तियों को सुनकर किसके हृदय में आनन्द नहीं पैदा होता?